श्री ज्ञानमती माता जी के 88वीं जन्म जयंती के अवसर पर आयोजित विनयांजलि कार्यक्रम में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का उदबोधन

- यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आज भारत गौरव गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी की 88वीं जन्मजयंती शरदपूर्णिमा महोत्सव के शुभ अवसर पर उनके श्रीचरणों में वंदन करने का, उन्हें प्रणाम करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो रहा है।

- आज शरद पूर्णिमा का दिन है और इस शुभ अवसर पर सत, चित, आनंद, भक्ति, ज्ञान, दया और करूणा की साक्षात प्रतिमूर्ति परम आदरणीय ज्ञानमति माता का मार्गदशन हमें प्राप्त हो रहा है। वे जैन धर्म ही नहीं, समस्त मानवता के लिए एक प्रकाश स्तंभ हैं।

- जैन धर्म की प्राचीन गौरवशाली परंपरा रही है। तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा दी गई सादगी, तपस्या और आत्मसंयम की शिक्षा के अनुसरण में माता जी का जीवन सभी के लिए प्रेरणामय रहा है।

- जैन धर्म जिस साधना, सेवा, त्याग एवं उच्च नैतिक आदर्शों के लिए जाना जाता है, श्री माताजी उसकी जीवंत प्रतिमूर्ति हैं।

- श्री ज्ञानमती माताजी ने जिस लगन एवं तल्लीनता से समस्त देश में जैन तीर्थों को सुरक्षित, संवर्धित और सुपोषित करने का कार्य किया है, इसके लिए मैं उनका समस्त राष्ट्र की तरफ से साधुवाद करता हूँ।

- आज जगत माता के सान्निध्य में उनके ज्ञान के प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित है। उनके तेजमय व्यक्तित्व ने समस्त विश्व को सदैव सन्मार्ग दिखलाया है। माताजी का जीवन अनवरत साधना एवं त्यागमय जीवन का एक अनूठा उदाहरण है।

- आप किशोर अवस्था से ही वैराग्य भाव से प्रभावित रहीं। कुमारी अवस्था में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर आपने एक अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया। जिसके फलस्वरूप देश में आज शताधिक ऐसी आर्यिकायें हैं जिन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश के पूर्व ही संसार की असारता का ज्ञान प्राप्त कर आर्यिका के महाव्रतों को अंगीकार किया है।

- आपके विशद ज्ञान, उत्कृष्ट साधना एवं कठोर तपस्या का ही प्रभाव है कि आपके संपर्क में आने वाला प्रत्येक श्रावक/श्राविका आपके सम्मुख नतमस्तक हो जाता है।

- आपका सहज, सरल, सौम्य एवं मधुर व्यक्तित्व मानव मन को आर्किषत करता है, आप अपनी करुणा, ममता एवं वात्सल्य से युवाओं के हृदय को झंकृत करती हैं एवं अपनी तर्कपूर्ण वैज्ञानिक विवेचनाओं से उनकी जिज्ञासाओं को तृप्त करती हैं।

- उनके सान्निध्य में जहाँ एक और जैन धर्म की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार होता है, वही सम्पूर्ण समाज में प्रेम, सद्भाव व उच्च नैतिक मूल्यों का प्रसार होता है।

- जैन धर्म में न केवल अहिंसा पर बल दिया जाता है बल्कि मानवता की सेवा पर भी बल दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप हमें अपने आस-पास इतने सारे अस्पताल, स्कूल और लोकोपकारी अन्य संस्थान दिखाई देते हैं जिनकी स्थापना और प्रबंधन जैन धर्म के लोगों द्वारा किया जा रहा है। उनके परोपकारी कार्यों से सभी की भलाई के लिए जन सेवा किए जाने और लोकोपकारी कार्य किए जाने की भावना को बढ़ावा मिलता है।

- आज भारत गौरव गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी के 88वीं जन्मजयंती शरद पूर्णिमा महोत्सव के शुभ अवसर पर मैं उनके सुदीर्घ स्वास्थ्य, आध्यात्मिक रूप से उन्नत एवं प्रसन्नचित्त जीवन की कामना करता हूँ।

- प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, श्री ज्ञानमती माताजी आने वाले वर्षों में भी हम सभी के लिए निरंतर प्रेरणा, संरक्षण और आश्रय प्रदान का कार्य करते रहें एवं हम सबको सदैव धर्म मार्ग में लगाए रखें, ईश्वर से यही प्रार्थना है।

- मैं एक बार पुन: गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माता जी के के श्रीचरणों में नमन करता हूं। आपके श्रीप्रताप से समस्त मानव जगत में शांति, सुख-समृद्धि आए, ऐसी मंगलकामना करता हूँ।

- जय जिनेंद्र। जय जिनेंद्र। धन्यवाद।